बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय चार

निर्देशात्मक दृष्टिकोण : पवित्रशास्त्र के भाग और पहलू

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:27) 4

II. पवित्रशास्त्र की विविधता (3:06) 4

A. भाषा (4:52) 4

1. असाधारण (7:24) 5

2. साधारण (10:20) 5

B. साहित्य (14:55) 7

C. आशय (25:56) 9

III. पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की व्यवस्था (28:05) 9

A. दस आज्ञाएं (30:03) 10

B. तीन प्रकार के नियम (38:59) 12

1. योग्यताएं (40:31) 12

2. महत्व (43:25) 13

3. प्रयोग (45:19) 14

IV. पवित्रशास्त्र की एकता (59:49) 18

A. प्रेम की आज्ञा (1:01:20) 18

B. अनुग्रह का सुसमाचार (1:05:58) 19

C. नई वाचा (1:13:34) 22

D. समन्वयता (1:18:14) 22

V. उपसंहार (1:24:35) 24

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 25

उपयोग के प्रश्न 30

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:27)

इस अध्याय में हम हमारे ध्यान को उन भिन्न तरीकों की ओर लगाएंगे जिसमें पवित्रशास्त्र के भिन्न भाग और पहलू हमारे समक्ष परमेश्वर के मानकों को प्रकट करते हैं।

II. पवित्रशास्त्र की विविधता (3:06)

पवित्रशास्त्र कई भिन्न तरीकों से बातचीत करता है।

A. भाषा (4:52)

बाइबल भाषा की पूरी श्रृंखला को प्रदर्शित करती है जो हम संपूर्ण मानवीय बातचीत में पाते हैं।

यदि हम नहीं समझते कि कि किस प्रकार भाषा का प्रत्येक प्रकार कार्य करता है, तो संभव है कि हम बाइबल की शिक्षा को गलत समझ लें।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. असाधारण (7:24)

जो मानते हैं कि बाइबल असाधारण रूप में बात करती है, वे प्रायः व्याख्या की एक ऐसी प्रणाली को विकसित करने के लिए बाइबल की भाषा को कुछ ज्यादा ही सरल बना देते हैं जिसे सारे पवित्रशास्त्र पर समान रूप से लागू किया जा सके।

मध्य युगों की गलती : क्योंकि बाइबल परमेश्वर के द्वारा प्रेरणा-प्राप्त है, इसलिए यह ऐसे असाधारण तरीकों में बात करती है जो मानवीय समझ से परे हैं।

अनेक मसीही मानते हैं कि पवित्रशास्त्र की असाधारण प्रकृति इसकी भाषा को व्याख्या के लिए सरल बना देती है।

2. साधारण (10:20)

बाइबल साधारण मानवीय भाषा में बातचीत करती है, जिसमें वह मानवीय बातचीत की आम बातों का प्रयोग करती है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पवित्रशास्त्र की स्पष्टता का अर्थ है :

- बाइबल धुंधली नहीं है
- यह ऐसे गुप्त अर्थों से भरी हुई नहीं है जिसे केवल इनके द्वारा ही खोजा जा सकता हो :
    - रहस्मयी माध्यमों
    - विशेष आत्मिक वरदानों
    - कलीसिया के विशेष अधिकारियों

कई अनुच्छेदों में जहां अक्षरशः रूप में पढ़ना बहुत ही भ्रामक हो सकता है।

बाइबल अपने लेखकों और उनके मूल श्रोताओं की भाषाई परंपरा का प्रयोग करती है।

हमें सीखना है कि लेखकों और उनके मूल श्रोताओं ने साधारण रूप में भाषा का इस्तेमाल कैसे किया, और कि हरेक लेखक का अभिप्राय क्या था जब उसने यह लिखा था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. साहित्य (14:55)

पवित्रशास्त्र में साहित्य के अनेक भिन्न-भिन्न रूप और प्रकार हैं।

नैतिक शिक्षा सामान्यतः बाइबल के ऐसे अनुच्छेदों पर ध्यान देती है जिनमें नियम पाए जाते हैं या जो सीधे-सीधे नैतिक स्तरों या जिम्मेदारियों को सिखाते हैं।

बाइबलीय वर्णन भी नैतिक नियमों और विधियों को बताते हैं।

बाइबल का हर अनुच्छेद परमेश्वर के चरित्र को दर्शाता है, और उसमें नैतिक शिक्षा पाई जाती है, फिर चाहे वह किसी भी प्रकार का साहित्य हो।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

ऐतिहासिक वर्णन मसीही नैतिक शिक्षा के हमारे अध्ययन और क्रिया में योगदान देते हैं :

- उनके वास्तविक संकलन को स्वीकार करने में हमें प्रेरित करते हैं

- उनमें हमें नैतिक रूप से बदलने की शक्ति है

- परमेश्वर के नियमों के लिए ऐतिहासिक स्थिति को प्रदान करते हैं

- ऐतिहासिक घटनाओं के प्रति परमेश्वर के मूल्यांकन को प्रस्तुत करते हैं।

- बाइबलीय इतिहास के लेखकों ने अपनी नैतिक टिप्पणियों को भी लिखा

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

बाइबलीय ऐतिहासिक प्रलेखों के लेखकों ने अपनी कहानियों के अनेक चरित्रों, स्वभावों, घटनाओं की अच्छाई और बुराई पर टिप्पणी की।

हर प्रकार का साहित्य निर्देशात्मक है; हर प्रकार का साहित्य हमें इस बारे में कुछ सिखाता है कि हमें कैसे सोचना, कार्य करना और महसूस करना चाहिए।

C. आशय (25:56)

कि पवित्रशास्त्र की विविधता यह दर्शाती है कि नैतिकता के बारे में हमारी अपनी शिक्षा इन भिन्न शैलियों के प्रयोग से लाभ प्राप्त कर सकती है।

III. पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की व्यवस्था (28:05)

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की व्यवस्था बाइबल के उन भागों को शामिल करता है जो नैतिक शिक्षा को सबसे स्पष्ट रूप में संबोधित करते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इन अध्यायों में “परमेश्वर की व्यवस्था” : पवित्रशास्त्र के वे भाग जो कानूनी भाषा के साहित्यिक रूप में लिखे गए।

व्यवस्था में परमेश्वर की अनेक नैतिक मांगों की सबसे स्पष्ट और सटीक अभिव्यक्तियां पाई जाती हैं।

A. दस आज्ञाएं (30:03)

दस आज्ञाओं में पवित्रशास्त्र की अन्य आज्ञाओं से अधिक महत्व पाया जाता है।

- ऐतिहासिक
- धर्मवैज्ञानिक

पहले लिखित कानूनी नियम जिन्हें इस्राएल राष्ट्र द्वारा प्राप्त किया गया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

वाचा की पुस्तक : दस आज्ञाओं के साथ प्राप्त अन्य नियम

दस आज्ञाओं में धर्मविज्ञानी या वैचारिक महत्व भी पाया जाता है।

परमेश्वर ने पत्थर की तख्तियों पर दस आज्ञाओं को लिखा था। व्यवस्था के दिए जाने के समय बादल गरजे और बिजली चमकी, धुंआ उठा, बादल छाए और आकाशीय तुरही फूंकी गईं।

मूसा ने दस आज्ञाओं को अपने लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा के रूप में पहचाना।

दस आज्ञाओं को वाचा के संदूक में रखा गया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यीशु ने दस आज्ञाओं के महत्व की पुष्टि की।

B. तीन प्रकार के नियम (38:59)

पुराने नियम के भिन्न नियमों को तीन मुख्य समूहों में विभाजित करना आम बात रही है :

- नैतिक — परमेश्वर के नैतिक स्तर; सामान्यतः उन्हें दस आज्ञाओं के साथ देखा जाता है।

- सामान्य या सार्वजनिक — समाज के संचालन के लिए होते हैं।

- आनुष्ठानिक — परमेश्वर की आराधना के लिए निर्देश प्रदान करते हैं।

1. योग्यताएं (40:31)

पवित्रशास्त्र नहीं बताता कि कि ऐसे भिन्न प्रकार के नियम हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पवित्रशास्त्र कुछ नियमों को स्पष्ट रूप से एक से अधिक श्रेणियों से संबंधित होते हुए प्रस्तुत करता है।

2. महत्व (43:25)

त्रिरूपीय विभाजन यह देखने में सहायता करता है कि व्यवस्था ने सारे जीवन को संचालित किया।

त्रिरूपीय विभाजन उस सच्चे अंतर को दर्शाता है जो पवित्रशास्त्र उन तीनों कार्यक्षेत्रों के बीच प्रकट करता है, जिसने इस्राएल के परमेश्वर पर भरोसे को संचालित किया :

- भविष्यवक्ता
- याजक
- राजा

जब बाइबल हमें किसी एक नियम को लागू करने के बारे में विस्तरित जानकारी देती है और वैसे ही नियम के बारे में बहुत कम जानकारी देती है, तो पहले नियम से विचारों को लेने के द्वारा दूसरे नियम के प्रति हमारे ज्ञान को बढ़ाना ठीक है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. प्रयोग (45:19)

अनेक धर्मविज्ञानी पुराने नियम की व्यवस्था के पारंपरिक विभाजनों की वैधता पर सहमत होते हैं, फिर भी वे इस बात पर असहमत होते हैं कि नैतिक शिक्षा के अध्ययन पर इन श्रेणियों को कैसे लागू किया जाए।

परमेश्वर के लोगों को उन अनेक व्यवहारों को दर्शाने की आवश्यकता नहीं है जो मूसा की बलिदानी और मन्दिर पद्धति के तहत आवश्यक थे।

सार्वजनिक नियमों की विशेष अपेक्षाएं अब लागू नहीं होती; वे अब "समाप्त" हो चुकी हैं।

पुराने नियम के सार्वजनिक और आनुष्ठानिक नियम अब इस भाव में वास्तव में "समाप्त" हो चुके हैं कि हमें जीवन के पुराने नियम के प्रारूपों की ओर लौटने की आवश्यकता नहीं है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

दूसरे भाव में पुराने नियम के सार्वजनिक और आनुष्ठानिक नियम आज भी आधुनिक मसीहियों पर लागू होते हैं।

ऐसे कारण हैं कि मसीहियों को आज भी नैतिक अगुवाई के लिए पुराने नियम के सार्वजनिक और आनुष्ठानिक नियमों और नैतिक नियमों की ओर देखना चाहिए :

- परमेश्वर का चरित्र हमसे इन नियमों के प्रकाशन से सीखने की मांग करता है।

- पवित्रशास्त्र पुराने नियम के हर नियम के निरन्तर आधुनिक प्रयोग के बारे में सिखाता है।

- प्रत्येक नियम परमेश्वर के स्तर को प्रकट करता रहेगा जब तक सब कुछ पूरा नहीं हो जाता।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- आनुष्ठानिक, सार्वजनिक और नैतिक विभाजनों के अंतर के बावजूद भी व्यवस्था एक साथ खड़ी रहती है।

- सारा पवित्रशास्त्र, न कि कुछ भाग, हमारा नैतिक उपदेश है।

- आनुष्ठानिक और सार्वजनिक नियम धार्मिकता के मार्गों में हमें प्रशिक्षित करने में उपयोगी हैं।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि हमारे नैतिक मूल्यांकनों में इस प्रकार के नियमों को कैसे शामिल किया जाए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

कोई भी नियम तब तक अच्छी तरह से समझा या लागू नहीं किया जा सकता जब तक जिस परिस्थिति पर उसे लागू करना है, और जो व्यक्ति इसे लागू करता है को ध्यान में न रखा जाए।

परमेश्वर के चरित्र के उसी पहलू को भिन्न परिस्थितियों में भिन्न रूपों में लागू किया जाता है।

याजक के रूप में मसीह व्यवस्था के आनुष्ठानिक पहलुओं को पूरा करता है।

राजा के रूप में मसीह व्यवस्था के सार्वजनिक पहलुओं को पूरा करता है।

भविष्यवक्ता के रूप में मसीह व्यवस्था के नैतिक पहलुओं को पूरा करता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. पवित्रशास्त्र की एकता (59:49)

व्यवस्था परमेश्वर के लिखित प्रकाशन के अन्य भागों से संबंध रखती है।

A. प्रेम की आज्ञा (1:01:20)

यीशु : परमेश्वर से प्रेम करने की आज्ञा सारी आज्ञाओं में बड़ी आज्ञा है।

यीशु : हमारे पड़ोसी से प्रेम करने की आज्ञा दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा है।

पौलुस : हमारे पड़ोसी से प्रेम करने की आज्ञा किसी अन्य आज्ञा से अलग नहीं है क्योंकि पवित्रशास्त्र की सारी आज्ञाएं हमें अपने पड़ोसी से प्रेम करना सिखाती हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

न तो यीशु ने और न ही पौलुस ने व्यवस्था के अनेक नियमों को एक ऐसे सरल नियम से बदलने का प्रयास किया जिसमें केवल परमेश्वर और पड़ोसी से प्रेम करना ही हो।

B. अनुग्रह का सुसमाचार (1:05:58)

आम गलतफहमी : व्यवस्था अनुग्रह के सुसमाचार के विपरीत है।

वे तीन रूप जिनमें पवित्रशास्त्र में व्यवस्था का प्रयोग किया जाता है।

- व्यवस्था का पहला प्रयोग — शैक्षणिक प्रयोग, या शिक्षक के रूप में व्यवस्था का प्रयोग।

- व्यवस्था का दूसरा प्रयोग — सार्वजनिक प्रयोग; समाज में पाप को रोकने के लिए

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- व्यवस्था का तीसरा प्रयोग — निर्देशात्मक; विश्वासयोग्य मसीहियों के लिए निर्देशिका या नियम के रूप में प्रयोग

पौलुस ने रोमियों 7:7-8 में व्यवस्था के शैक्षणिक प्रयोग के साथ अपने अनुभव के बारे में लिखा।

व्यवस्था का शैक्षणिक प्रयोग विश्वासियों पर प्रत्यक्ष रूप से लागू नहीं होता। एक बार जब एक व्यक्ति मसीह के पास आ जाता है, तो इस रूप में व्यवस्था का कार्य पूरा हो जाता है।

व्यवस्था के सार्वजनिक या दूसरे प्रयोग में यह शामिल होता है कि व्यवस्था किस प्रकार इसका उल्लंघन करने वालों के विरूद्ध दण्ड की चेतावनी देने के द्वारा पाप को रोकती है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

विश्वासियों और अविश्वासियों के लिए व्यवस्था का यह इस्तेमाल एक जैसा है। यह एक साधन के रूप में बुराई को रोकने हेतु लोक प्रशासन के लिए परमेश्वर के स्थान पर ध्यान देता है।

निर्देशात्मक प्रयोग मसीही जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा के प्रकाशन के रूप में व्यवस्था को लागू करता है।

जब व्यवस्था का प्रयोग मसीही व्यवहार के स्तर के रूप में किया जाता है, तो यह पूरी तरह से सुसमाचार के साथ संगत होता है।

विश्वासी इस भाव में "व्यवस्था के अधीन" नहीं है कि जब हम पाप करते हैं तब हम इसके श्राप को सहते हैं, हम इस भाव में "व्यवस्था के अधीन" हैं कि हम इसकी आशीषों को प्राप्त करते हैं, और इस भाव में भी कि हम इसे मानने के प्रति प्रेरित होते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. नई वाचा (1:13:34)

छुटकारे का इतिहास और नई वाचा : वे बदलावों जो यीशु मसीह के कार्य के फलस्वरूप पुराने और नए नियम के समयों के बीच हुए।

नई वाचा में हम व्यवस्था को अपने अन्दर समा लेते हैं और गंभीरता के साथ इसका पालन करते हैं।

परमेश्वर का वचन सदैव उसके लोगों के हृदयों और मनों में वास करना था, और यह पुराने नियम में भी वास्तव में अनेक लोगों के हृदयों और मनों में था।

D. समन्वयता (1:18:14)

परमेश्वर के नियम वास्तव में कभी परस्पर विरोधी नहीं होते, उसी प्रकार जैसे परमेश्वर का चरित्र कभी अपने में विरोधी नहीं होता।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

क्योंकि व्यवस्था एकीकृत है, इसलिए इसकी भिन्न आज्ञाएं सामूहिक रूप से हमारी आज्ञाकारिता की मांग करती हैं।

हम संपूर्ण व्यवस्था को कभी समझ नहीं पाएंगे, इसलिए समय-समय पर हम परमेश्वर के भिन्न नियमों के बीच असमंजस को महसूस करेंगे।

परमेश्वर के नियम इस अप्रत्यक्ष धारणा के साथ दिए गए हैं कि कभी-कभी कुछ नियम दूसरे नियमों पर प्रमुखता को रखते हैं।

एक नियम को दूसरे नियम से अधिक प्रमुखता देना वास्तव में संपूर्ण व्यवस्था के अनुरूप है, और इसलिए यह भिन्न नियमों के बीच विरोध नहीं है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

बाइबलीय नियम इस अप्रत्यक्ष धारणा के साथ भी दिए गए हैं कि नियमों के अपवाद भी हैं।

सामान्य सिद्धान्त कभी-कभी कार्य के विपरीत मार्ग को दर्शाते हैं। हर आज्ञा और सिद्धान्त को देखें और हर जिम्मेदारी के प्रकाश में परिस्थितियों और प्रेरणाओं को मापें।

V. उपसंहार (1:24:35)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. बाइबल में पाई जाने वाली भाषा की विविधता का वर्णन कीजिए और भाषा के साधारण और असाधारण प्रयोगों के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

2. बाइबल में पाए जाने वाले साहित्य की विविधता का वर्णन कीजिए। शैलियों की यह विविधता कौनसे लाभकारी उद्देश्यों को पूरा करती है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली विविधता के प्रकश में आज पढाई जाने वाली नैतिक शिक्षा के तरीकों पर इसके क्या आशय हो सकते हों?

4. किन रूपों में दस आज्ञाओं की प्रमुखता ऐतिहासिक और धर्मविज्ञानी दोनों है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. व्यवस्था की तीन पारंपरिक श्रेणियां कौन-कौन सी हैं, और आधुनिक संसार में व्यवस्था को लागू करने में हमारी सहायता के लिए हम उनका प्रयोग कैसे कर सकते हैं?

6. किस प्रकार व्यवस्था प्रेम की आज्ञा से संबंधित है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. व्यवस्था और अनुग्रह के सुसमाचार के बीच क्या संबंध है?

8. छुटकारे के इतिहास और नई वाचा के संबंध में व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. परमेश्वर की सभी आज्ञाओं में कैसी समन्वयता पाई जाती है?

10. व्यवस्था के संबंध में पवित्रशास्त्र की एकता को कैसे दर्शाया गया है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. बाइबल द्वारा भाषा के साधारण प्रयोग के प्रकाश में आपको पवित्रशास्त्र का इस्तेमाल कैसे करना चाहिए?

2. बाइबलीय इतिहास के बारे में आपका ज्ञान आपके व्यवहार को कैसे प्रभावित करना चाहिए?

3. यदि आपका मित्र आपसे पूछे, "यह कैसे हो सकता है कि एक भाव में तो पुराने नियम के सार्वजनिक और आनुष्ठानिक नियम समाप्त हो चुके हैं, परन्तु दूसरे भाव में वे आज भी लागू होते हैं?" आप अपने मित्र के प्रश्न का उत्तर कैसे देंगे?

4. किस प्रकार "प्रेम की आज्ञा" और बाइबल के अन्य सभी नियम एक-दूसरे के पहलू हो सकते हैं?

5. व्यवस्था को मानने का कौनसा कारण नई वाचा आपको देती है?

6. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org